

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 26, यिर्मयाह 30-33, नई वाचा

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश में हैं। यह सत्र 26, यिर्मयाह 30 से 33, नई वाचा है।

इस खंड में हमारा ध्यान यिर्मयाह की नई वाचा की प्रतिज्ञा पर होगा।

और जैसा कि हम यिर्मयाह की बहाली के वादे को देख रहे हैं, मुझे लगता है कि हम इस मार्ग के केंद्रीय महत्व को समझते हैं। यिर्मयाह 30 से 33 वास्तव में इस अर्थ में केंद्रीय है कि यह नई वाचा है कि भगवान इस बहाली और मोक्ष को कैसे लाने जा रहे हैं। परमेश्वर अपने लोगों की पुनर्स्थापना में क्या करने जा रहा है जो सदियों और सदियों के विद्रोह के इस पैटर्न को तोड़ देगा? भगवान इस टूटे हुए विवाह को कैसे ठीक करेगा? परमेश्वर अपने बेवफा बेटे के साथ रिश्ता कैसे बहाल करेगा? नई वाचा उसमें केन्द्रीय है।

ईसाइयों के रूप में हमारे लिए, नई वाचा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तव में कई मायनों में पुराने नियम को नए नियम से जोड़ती है। पुराना नियम हमें नई वाचा का वादा देता है। नया नियम हमें नई वाचा की पूर्ति देता है।

इसलिए, अगर मैंने नई वाचा पर ध्यान केंद्रित करने में कुछ समय नहीं बिताया तो मैं एक ईसाई के रूप में अपनी साख खो दूंगा। मैं परिच्छेद को पढ़कर शुरुआत करूंगा, और फिर हम विशेष रूप से देखेंगे कि वादे क्या हैं और यह नई वाचा क्या है। हालाँकि, इससे पहले कि हम इस अनुच्छेद को पढ़ें, पूरे पुराने नियम में परमेश्वर और उसके लोगों के वाचा के इतिहास के संदर्भ को याद करें। पुराने नियम में मुक्ति का इतिहास उन अनुबंधों की एक श्रृंखला के आसपास बनाया गया है जिन्हें ईश्वर लोगों के साथ स्थापित करता है, मानवता को उसके साथ एक सही रिश्ते में वापस लाने की कोशिश करता है।

यह रिश्ता तब खंडित हो गया जब आदम और हव्वा ने पाप किया और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया। उन्हें एक पद दिया गया जहां वे भगवान के उप-शासनकर्ता थे। वे पृथ्वी पर परमेश्वर की छवि थे।

उन्हें उसकी महिमा और उसके सम्मान को प्रतिबिंबित करना था। मुझे लगता है कि उन्हें, कुछ अर्थों में, ईडन गार्डन को पूरी पृथ्वी पर फैलाना था ताकि पूरी मानवता ईश्वर के आशीर्वाद का अनुभव कर सके। जब उन्होंने इसके खिलाफ विद्रोह किया, तो भगवान, एक प्राचीन निकट पूर्वी राजा की तरह, अनुबंधों की एक श्रृंखला के माध्यम से अपना शासन लागू करने जा रहे थे।

नूह के साथ पहली वाचा, पृथ्वी को दोबारा नष्ट न करने का वादा, लेकिन यह जिम्मेदारी कि जो कोई मनुष्य द्वारा मनुष्य का खून बहाएगा उसका खून बहाया जाएगा। बाबेल की मीनार पर विद्रोह के बाद, परमेश्वर अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधने जा रहा है। वह उसे भूमि, कई वंशजों

का वादा करने जा रहा है, और वह अब आशीर्वाद का साधन बन जाएगा जो भगवान ने मूल रूप से एडम को दिया था।

यह वाचा अब्राहम के वंशजों को परमेश्वर के लोगों के रूप में स्थापित करने जा रही है। मूसा की वाचा उन लोगों के लिए स्थापित करने जा रही है कि परमेश्वर के लोगों के रूप में कैसे जीना है। अगर वे वाचा का पालन करेंगे तो उन्हें आशीर्वाद मिलेगा।

यदि वे अवज्ञा करते हैं तो उन्हें शाप दिया जाएगा। इसकी परिणति का इतिहास, उन्होंने वाचा के शापों का अनुभव किया क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं। परमेश्वर ने उन्हें एक राजा दिया और दाऊद के घराने के साथ एक वाचा बाँधी, दाऊद की वाचा, जिसने वादा किया कि दाऊद का परिवार हमेशा के लिए शासन करेगा, जिसने दाऊद के सिंहासन और देश पर शासन स्थापित किया।

अंततः, दाऊद और उसके पुत्र, परमेश्वर के उप-शासक के रूप में, पूरी पृथ्वी पर शासन करेंगे। लेकिन उन पर जो दायित्व डाला गया था, वह यह था कि उस वंश के प्रत्येक दाऊदी राजा को परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता या अवज्ञा के आधार पर आशीर्वाद या दण्ड दिया जाएगा। परमेश्वर की योजना में उभरने वाली प्रत्येक वाचा और पहले से ही आई हुई वाचाओं के बीच एक संबंध है।

दाऊद का राजा उन्हें उस भूमि पर अधिकार करने और अपने शत्रुओं से मुक्त होने में सक्षम बनाएगा। लेकिन दाऊद के राजा की भी एक जिम्मेदारी थी अगर वे उस भूमि को प्रभु की आज्ञा मानने के लिए रखना चाहते थे। इसलिए, यिर्मयाह, फिर से, दाऊद के घराने की असफलताओं की पराकाष्ठा है, वह न्याय जो उन पर आने वाला है।

इसलिए, परमेश्वर ने वाचाओं की ये श्रृंखला बनाई है: नूह की वाचा, अब्राहम की वाचा, मूसा की वाचा और दाऊद की वाचा, लेकिन उद्धार के इतिहास में, अवज्ञा का यह लंबा पैटर्न है। नई वाचा अंततः इसका समाधान होने जा रही है और यह भी कि परमेश्वर किस तरह से इस शानदार पुनर्स्थापना को लाने जा रहा है जिसका वर्णन सांत्वना की पुस्तक में हमारे लिए किया गया है। यहाँ अंश है।

देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। यह उस वाचा के समान नहीं है जो मैं ने उस दिन उनके पुरखाओं से बान्धी थी, जब मैं ने उन्हें मिस्र देश से निकालने के लिये उनका हाथ पकड़ लिया, परन्तु मेरी वह वाचा उन्होंने तोड़ दी, यद्यपि मैं उनका पति था, यहोवा की यही वाणी है, परन्तु यह है यह वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा। मैं अपनी व्यवस्था उनके भीतर समवाऊंगा, और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।

और अब से हर एक अपने पड़ोसी को और अपने भाई को यह न सिखाएगा, कि प्रभु को जानो, क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जान लेंगे, यहोवा की यही वाणी है, क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका स्मरण करूंगा। अब और पाप मत करो.

इसलिए, इस सत्र में, हम विशेष रूप से इस अनुच्छेद और यहां दिए गए वादों, विशिष्ट वादों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, और वास्तव में यह पुराने नियम के कुछ अन्य हिस्सों में भी कैसे प्रकट होता है। मुझे लगता है कि जब मैं इसे देख रहा हूं तो पहली बात जो मेरे सामने आती है वह यह है कि श्लोक 31 में, प्रभु कहते हैं, जो वाचा मैं बनाने जा रहा हूं, यह नई वाचा, उस वाचा के समान नहीं होगी जो मैंने बनाई थी जिस दिन मैं उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, उस दिन उनके पुरखाओं के संग।

तो, इस नई वाचा का मुख्य उद्देश्य क्या है और इसे अंततः वह करने की शक्ति क्या मिलेगी जो पहली वाचा नहीं कर सकी, वह यह है कि उद्धार का एक ऐसा कार्य होने जा रहा है जो निर्गमन से परे होगा। और हमने पिछले सत्र में इस नए निर्गमन के बारे में बात की थी। याद रखें कि यशायाह ने कहा था कि दूसरा निर्गमन पहले निर्गमन से बड़ा होगा, पहला, प्रभु उन्हें कई राष्ट्रों से बाहर निकालेंगे।

दूसरा, उन्हें बेबीलोन की भूमि को जल्दबाजी में नहीं छोड़ना पड़ेगा जैसा कि उन्होंने मिस्र के साथ किया था। तीसरा, प्रभु जंगल को मरुद्यान में बदल देंगे। इसलिए, भूमि पर वापस जाने का सफर आसान हो जाएगा।

और चौथा, वे प्रभु की आराधना करने के लिए भूमि पर वापस आएंगे और उन्हें फिर कभी वहाँ से नहीं ले जाया जाएगा। तो, यह उद्धार का एक ऐसा कार्य है जो पहले पलायन से भी आगे निकल जाएगा। यह बस, यहाँ पर खड़ा है।

यह उस वाचा के समान नहीं होगी, जब मैंने अपने प्रेम और अपनी कृपा और अपनी दया और करुणा से तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बचाया था। ऐसा नहीं होने वाला है। वास्तव में, यह उससे भी बड़ा कुछ होने जा रहा है।

और यह इस नए निर्गमन और इस बड़े उद्धार के माध्यम से मुक्ति का एक कार्य होने जा रहा है जो प्रभु उन्हें लाने जा रहे हैं। यही वह चीज़ होगी जो इसे अंततः चिपकाएगी। रिश्ता वैसे ही चलेगा जैसे भगवान ने इसे बनाया है।

यिर्मयाह, अध्याय 23, छंद सात और आठ में, साथ ही वह पुनर्स्थापना का वादा कर रहा है, पहले वाले से भी बड़े दूसरे निर्गमन की तलाश में है। वह कहता है, देख, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं जब लोग फिर न कहेंगे, यहोवा के जीवन की सौगन्ध जो इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आया, परन्तु उस यहोवा के जीवन की शपथ जो इस्राएल के वंश का पालन-पोषण और अगुवाई करता है। इस्राएल का घराना उत्तरी देश से बाहर है। तो, पुराने नियम के पूरे इतिहास में मुक्ति में आदर्श कार्य निर्गमन रहा है।

लेकिन यह मुक्ति इतनी शानदार होने वाली है कि वे वास्तव में अब इसका संदर्भ भी नहीं देंगे। यह मुक्ति का एक बड़ा कार्य होने जा रहा है। इसलिए, मुझे लगता है कि बाइबिल में मुक्ति के इतिहास में हम यही कहते आ रहे हैं कि आपके पास ईश्वर है। यह एक पैटर्न है जहां भगवान लोगों को बचाते और बचाते हैं।

उद्धार का अर्थ यही है। परमेश्वर इस्राएल के बच्चों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाता है। नई वाचा में, परमेश्वर उन्हें कैद की गुलामी से छुड़ाने जा रहा है।

यीशु पाप की कैद से मुक्ति दिलाने के लिए आता है। तो, आपके पास यह आवर्ती पैटर्न है। जिस तरह से परमेश्वर अतीत में बचाता है, उसी तरह से वह वर्तमान में भी बचाता है और जिस तरह से वह भविष्य में बचाएगा।

ईश्वर एक ऐसा ईश्वर है जो बचाता है। लेकिन जी.के. बील ने अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में उद्धार के इतिहास के बारे में जो बात जोर देकर कही है, वह यह है कि उद्धार को उद्धार और नई सृष्टि के कार्यों की इन श्रृंखलाओं के रूप में भी समझा जा सकता है, जहाँ ईश्वर उद्धार के इतिहास को आगे बढ़ाने के प्रत्येक पहलू में लगातार एक बड़ा काम कर रहा है। इसलिए, नई सृष्टि के कार्यों की ये श्रृंखलाएँ हैं जिनमें ईश्वर अंततः पतित मानवता या अपने लोगों को अपने पास वापस लाता है।

नई सृष्टि के प्रत्येक कार्य के साथ, मुक्ति के प्रत्येक कार्य के साथ, भगवान एक अधिक शक्तिशाली कार्य कर रहे हैं जो अंततः हमें उस स्थान पर लाएगा जहाँ भगवान का राज्य पूरी तरह से बहाल हो जाएगा, मनुष्य भगवान के साथ एक सही रिश्ते में रहेगा, और वहाँ फिर कभी न्याय की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि परमेश्वर पाप का नाश करने जा रहा है। लेकिन आइए जरा सोचें कि मुक्ति का इतिहास इस तरह से कैसे काम करता है। आदम पाप करता है और विद्रोह करता है।

और इसलिए, परमेश्वर एक नये आदम, नूह को खड़ा करने जा रहा है। और उस ने नूह से कहा, फूलो-फलो, और बढ़ो। वह नूह को वही स्थान देता है जो उसने आदम को दिया था।

एक बचाव और एक मुक्ति है। जब बाढ़ के विनाश के बाद भगवान नूह को पुनर्स्थापित करते हैं, तो एक नई रचना होती है। अब्राहम की कहानी में हमारे पास एक दूसरा आदम, एक और नया आदम है।

और जिस तरह आदम को बगीचे में राजा और पुजारी होने का पद दिया गया था, उसी तरह अब्राहम के वंशज, राजा तुमसे निकलेंगे और वे पुजारियों का राज्य होंगे। उन्हें उस आदमिक पद पर बहाल किया जाएगा। और फिर प्रभु नई सृष्टि का यह कार्य करने जा रहा है जहाँ वह उन्हें मिस्र की कैद से बाहर निकालता है।

प्रभु दाऊद और सुलैमान के साथ नए आदम को खड़ा करने जा रहे हैं। वे इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के राज्य का अधिक पूर्ण अनुभव करने में मदद करने जा रहे हैं, उस भूमि पर अधिकार करेंगे जिसका वादा परमेश्वर ने उनसे किया था, वहाँ मौजूद शत्रुओं को हटाएँगे, और मंदिर और एक स्थायी पवित्रस्थान के माध्यम से परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद लेंगे। इसलिए वे नए आदम हैं, और वहाँ नई सृष्टि के कार्य हो रहे हैं।

परन्तु जब बन्धुवाई होगी, तो यह नई सृष्टि, यह नया निर्गमन, परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए अतीत में जो कुछ भी किया है, उससे कहीं अधिक महान होने जा रहा है। अंत में, जैसे ही हम नए

नियम में आगे बढ़ते हैं, मसीह जो मुक्ति लाता है और नई वाचा को उसके प्रारंभिक चरणों में लागू किया जाता है। और फिर उसके दूसरे आगमन पर, नई सृष्टि जो अंततः एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी लाने वाली है।

तो, परमेश्वर संपूर्ण बाइबिल में निरंतर विद्यमान है। इसमें एक कहानी है जहां भगवान लगातार और लगातार लोगों को बचा रहे हैं और छुटकारा दिला रहे हैं। ईश्वर अपनी दया और कृपा से यही करता है।

वह लोगों को पाप के बंधन से बाहर ला रहा है। वह नए एडम्स को खड़ा कर रहा है, जो पृथ्वी पर अपना राजत्व लागू करेंगे। अंततः, यह हमें एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी पर ला रहा है जहाँ इस नई वाचा का पूरी तरह से अनुभव किया जाएगा।

इस अनुच्छेद का पहला वादा यह है कि प्रभु ने अतीत में इस्राएल के लिए कुछ अद्भुत किया था। उन्होंने अपने बंधन में भगवान को पुकारा। निर्गमन में इज़राइल जिस दौर से गुज़र रहा था, उसके परिप्रेक्ष्य से, ऐसा लगता है कि उनके लिए कोई मुक्ति नहीं थी।

मिस्र इस समय पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली राष्ट्र है। वे कभी बंधन से कैसे बाहर निकलेंगे? खैर, प्रभु उनका उद्धार करते हैं। और दया और अनुग्रह के एक अविश्वसनीय कार्य में, वह मूसा में उनके लिए एक उद्धारकर्ता को खड़ा करता है।

वह विपत्तियाँ फैलाता है। वह लाल सागर में उद्धार लाता है। और यहोवा कहता है कि नई वाचा उस वाचा के समान नहीं होगी जो मैंने तब बनाई थी जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया था।

यह मेरे प्रेम, अनुग्रह और दया का एक बड़ा प्रदर्शन होगा। अंततः, इस मुक्ति को कायम रखने के लिए यही करना होगा। उद्धार के इस पिछले कार्य में, प्रभु ने स्वयं को इस्राएल का पति बनाया।

लेकिन मुक्ति के इस महान कार्य के माध्यम से भविष्य के कार्य में, भगवान अंततः अपनी पत्नी की निष्ठा की गारंटी देने जा रहे हैं। और इज़राइल एक वफादार वाचा भागीदार बन जाएगा। ठीक है।

तो मुझे लगता है कि यह इसका शुरुआती हिस्सा है। अब, मैं श्लोक 34 के इस अंश के अंत में जाना चाहूँगा और दूसरे पहलू पर ध्यान केंद्रित करना चाहूँगा। अच्छा, इसका क्या मतलब है? मुक्ति का यह अविश्वसनीय कार्य, नई रचना का यह महान कार्य, यह नया पलायन क्या है? इसमें क्या कुछ होता है? यह इतना बेहतर क्यों है? मुझे लगता है कि इस पाठ में जिस दूसरी बात पर जोर दिया गया है वह यह है कि इस नए उद्धार के हिस्से में पाप की एक मौलिक और मुक्त क्षमा शामिल होगी जो उस अनुग्रह और क्षमा से भी आगे जाती है जो भगवान ने अतीत में इज़राइल को दिखाया था।

पद 34 के अंत में, मैं उनके अधर्म को क्षमा कर दूँगा, और मैं उनके पाप को फिर कभी याद नहीं रखूँगा। ठीक है। निर्वासन के अनुभव में, यह वही है जिसकी इस्राएल को ज़रूरत है क्योंकि निर्वासन उनके पाप के लिए परमेश्वर की सज़ा थी।

और इसलिए, जैसा कि परमेश्वर इस मौलिक और मुफ्त क्षमा का वादा कर रहा है, यही वह है जो उद्धार को संभव बनाता है। यशायाह की पुस्तक में, प्रभु कहते हैं, लोगों को घोषणा करें कि उनकी कड़ी सेवा और श्रम के वर्ष समाप्त हो गए हैं, और अब क्षमा का समय है। परमेश्वर अब अपने पाप या लोगों के पाप को उनके विरुद्ध नहीं रखता है।

अध्याय 14 में, यिर्मयाह के दिनों में लोग, प्रभु के पास आते हैं और वे परमेश्वर को पाप की स्वीकारोक्ति देते हैं। यह अच्छा लगता है। यह अच्छा लगता है।

वे सही शब्द कहते हैं। यह वह सब कुछ है जो आप पाप स्वीकार करने में चाहते हैं, सिवाय एक बात के। उनके जीवन में कोई वास्तविक सच्चा पश्चाताप नहीं है।

प्रभु कहते हैं मैं उनकी स्वीकारोक्ति स्वीकार नहीं करता। और वहाँ एक विशिष्ट वक्तव्य दिया गया है। प्रभु उन्हें स्वीकार नहीं करते।

वह उनके अधर्म को स्मरण करेगा और उनके पापों का दण्ड देगा। तो इज़राइल निर्वासन के अनुभव से क्यों गुज़रता है? यहूदा को बन्धुवाई में क्यों ले जाया गया? क्योंकि यहोवा उनके पापों को स्मरण रखता है। और उन्हें इसके लिए दंडित किया जाएगा।

खैर, मुक्ति, जाहिर है, नई वाचा में, प्रभु अब उनके पापों को याद नहीं रखेंगे। तो, यह वादा है कि इज़राइल ने निर्वासन में जो अनुभव किया वह पूरी तरह से उसका हकदार था, लेकिन यह वादा भी है कि प्रभु उनके पापों को मौलिक रूप से और स्वतंत्र रूप से माफ कर देंगे। वह उन्हें मिटा देगा।

वह उन्हें ले जाने वाला है। और फिर, यिर्मयाह का संदेश और यशायाह के दूसरे भाग का संदेश, जो निर्वासन से मुक्ति के बारे में भी बात कर रहा है। हम यहाँ भी वही चीज़ देखते हैं।

यशायाह के दूसरे भाग में अध्याय 43, श्लोक 25 में यह कहा गया है: मैं ही वह हूँ जो अपने लिए तुम्हारे अपराधों को मिटा देता हूँ। ठीक है। परमेश्वर इस्राएल को क्यों क्षमा करता है? ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वे कौन हैं।

यह उसके अपने हित के लिए है। और प्रभु कहते हैं कि वह उन्हें मिटा देता है। दूसरे शब्दों में, वह एक रबड़ लेता है और बस इसे रिकॉर्ड से हटा देता है।

लेकिन निर्वासन के ज़रिए, परमेश्वर ने उन्हें उनके पाप के लिए जवाबदेह ठहराया है। उसने उन्हें सज़ा दी है। उसने उन्हें उनके पाप के कारण दासता में डाल दिया है।

लेकिन इस क्षमा का अर्थ होगा उस पाप को हटाना जिसके कारण पहले स्थान पर दण्ड की आवश्यकता थी। और प्रभु यह कहता है, और मैं तुम्हारे पापों को स्मरण नहीं करूँगा। इसलिए यशायाह 43, पद 25, यिर्मयाह अध्याय 31, पद 34 के समान ही बात कहता है।

वह कहते हैं, मुझे याद दिलाओ, आओ मिलकर बहस करें। अपना मामला सामने रखो ताकि तुम सही साबित हो सको। तुम्हारे प्रथम पिता ने पाप किया, और तुम्हारे मध्यस्थों ने मेरे विरुद्ध अपराध किया, परन्तु यहोवा अपनी प्रजा को क्षमा करने को तैयार है।

अध्याय 44, पद 22, इस्राएल के पापों की क्षमा के बारे में यशायाह के दूसरे भाग में एक और वादा। यहोवा कहता है, मैं ने तेरे अपराध को बादल के समान और तेरे पापों को कोहरे के समान मिटा दिया है। तो, प्रभु कहते हैं, तुम्हारा पाप सुबह के कोहरे के समान होगा जो गायब हो जाता है।

ठीक है। प्रभु ने उन्हें उनके पाप के लिए बन्धुवाई में भेजा था, परन्तु जब वह उन्हें छुड़ाएगा, तो उनके पाप मिट जाएँगे, और वे बादल की तरह गायब हो जाएँगे। फिर वह यशायाह 44, 22 में यह कहता है, मेरे पास लौट आता है, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है।

ठीक है। यहाँ बताया गया है कि क्षमा कितनी क्रांतिकारी होगी। यशायाह 44, श्लोक 22 में, प्रभु उन्हें उनके पास लौटने से पहले ही क्षमा कर देता है।

और कभी-कभी, भविष्यवक्ताओं में, ईश्वरीय पहल और मानवीय जिम्मेदारी के बीच परस्पर क्रिया, उस पाठ के आधार पर अलग-अलग जोर देती है जिसमें हम हैं या भविष्यवक्ता क्या करने की कोशिश कर रहा है। कभी-कभी, वे ईश्वरीय पहल पर जोर देने जा रहे हैं। और इस मामले में, यह निश्चित रूप से वहाँ है।

प्रभु उनके लौटने से पहले ही उन्हें क्षमा कर देंगे। और यह प्रभु की क्षमा ही है जो उन्हें लौटने के लिए प्रेरित करेगी। यिर्मयाह अध्याय 29 जैसे भविष्यवक्ताओं में अन्य स्थान हैं, जब वे पूरे दिल से मेरी खोज करेंगे तो प्रभु उन्हें बहाल करेंगे।

तो कौन सा भविष्यवक्ता हमें सच बता रहा है? खैर, वे दोनों ही सच बता रहे हैं। निश्चित रूप से प्रभु ही वह व्यक्ति है जो यहाँ पुनर्स्थापना की शुरुआत करने जा रहा है, लेकिन इसका मानवीय पक्ष भी है जहाँ उन्हें प्रभु के पास लौटना होगा। लेकिन यशायाह 44, पद 22 में परमेश्वर जो क्षमा देता है, वह ऐसी क्षमा है जो उन्हें उनके पास लौटने से पहले ही दी जाती है।

पुराने नियम में मेरी कुछ पसंदीदा छवियाँ और रूपक वे हैं जिनका उपयोग उस क्षमा का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो परमेश्वर हमें हमारे पापों के लिए देता है। भजन 103, प्रभु हमारे पापों को उतना ही दूर करने जा रहा है जितना कि पूर्व और पश्चिम के बीच है। कल्पना करने की कोशिश करें कि वह वहाँ किस बारे में बात कर रहा है।

मीका अध्याय 7 में, जब फिर से एक और भविष्यवक्ता निर्वासन के न्याय के बाद अपने लोगों की बहाली का वादा कर रहा है, मीका अध्याय 7 आयत 18 और उसके बाद शाब्दिक रूप से कहा गया है कि परमेश्वर अपने लोगों के पापों पर युद्ध की घोषणा करने जा रहा है। और परमेश्वर ने अतीत में इस्राएल की ओर से सभी प्रकार के पवित्र युद्ध लड़े हैं। भविष्य में, प्रभु इस्राएल के पाप के विरुद्ध पवित्र युद्ध लड़ने जा रहा है।

और यह कहता है कि प्रभु अपने लोगों के पाप को पैरों तले रौंदने जा रहा है। और फिर, उन्हें पैरों तले रौंदने के बाद, वह उन्हें समुद्र की गहराई में फेंक देगा। तो नए पलायन में ऐसा क्या था जो इतना परिवर्तनकारी होने जा रहा था? यह क्षमा की महानता और इसकी कट्टरपंथी और चरम प्रकृति थी।

अब आप शायद पूछ रहे होंगे, ठीक है, हमारे पास पूरे पुराने नियम में क्षमा के सभी प्रकार के उदाहरण हैं। ईश्वर के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं में से एक और उन चीजों में से एक जो ईश्वर स्वयं के बारे में यहोवा, वाचा-पालन करने वाले ईश्वर के रूप में प्रकट करता है, वह यह है कि वह एक ऐसा ईश्वर है जो क्रोध करने में धीमा है, दया में प्रचुर है, और इस प्रकार के सभी प्रकार के हैं। चीजें। हमने इसे पुराने नियम के पूरे इतिहास में देखा है।

लेकिन मेरा मानना है कि नई वाचा में, यहां कुछ हद तक क्षमा की पेशकश की जा रही है जो पहली वाचा के तहत भी सच नहीं थी। पुरानी वाचा में, और जिस तरह से मोज़ेक कानून के तहत चीजें स्थापित की गई थीं, बलिदान जो पाप के लिए प्रायश्चित प्रदान करते थे, और बलिदान की आवश्यकता थी, बलिदान केवल कुछ प्रकार के पापों के लिए प्रायश्चित प्रदान करता था। यह केवल अनजाने पापों का प्रायश्चित प्रदान करता था।

जब दाऊद जैसे किसी व्यक्ति ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, और उसने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया और फिर उसके पति की हत्या कर दी, तो दाऊद के पास कोई बलिदान नहीं था जिसे वह परमेश्वर के साथ उस मुद्दे को सुलझाने के लिए दे सकता था। और इसलिए उसे भजन 51 में परमेश्वर के पास आना पड़ा और खुद को न्यायालय की दया पर छोड़ देना पड़ा और परमेश्वर से अपने पाप को मिटाने की विनती करनी पड़ी। परमेश्वर ने दाऊद के लिए ऐसा किया।

और परमेश्वर, इस्राएल के इतिहास में, उनके लिए अक्सर ऐसा करता है। पाप के लिए कोई बलिदान नहीं है; परमेश्वर इसे प्रदान करता है। लेकिन यह वाचा जो वादा कर रही है वह उस तरह की मुफ्त दया और अनुग्रह और क्षमा है जो जानबूझकर और अनजाने में किए गए पाप के बीच अंतर नहीं करती है जिस तरह बलिदानों ने किया था, परमेश्वर इस्राएल को वह देने जा रहा है।

इस्राएल को प्रायश्चित दिवस के लिए हर साल लगातार यह ज़रूरत होती थी कि उन सभी पापों को ढ़ँक दिया जाए जो अन्य बलिदानों से ढ़ँके नहीं जा सकते थे। ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे एक भी इस्राएली ऐसा बलिदान चढ़ा सके जो उनके सभी पापों को ढ़ँक दे। और इसलिए प्रायश्चित की हर साल की ज़रूरत ने उन्हें याद दिलाया कि अगर वे परमेश्वर की उपस्थिति में जीने जा रहे हैं, तो उन्हें उन पापों के लिए प्रायश्चित की ज़रूरत है।

उन्हें वेदी पर जमा हुए अपने पाप की गंदगी को साफ करने की आवश्यकता थी ताकि वे वास्तव में एक और वर्ष के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में रहने का अवसर प्राप्त कर सकें। और परमेश्वर ने कृपापूर्वक उनके लिए हर साल ऐसा किया। लेकिन मेरा मानना है कि नई वाचा के वादे में यह शामिल है कि दया और क्षमा का स्तर उससे कहीं अधिक होगा जो इस्राएल ने अपने पिछले इतिहास में कभी अनुभव नहीं किया है।

और यह क्षमा की मौलिक प्रकृति और दया की गहराई है, यही वह चीज है जो पत्नी के दिल को छू लेगी और अंततः इस्राएल को एक वफ़ादार लोग बनने के लिए राजी कर लेगी। आप देखिए, जब हम बाइबल में क्षमा को देखते हैं और जब हम परमेश्वर की कृपा को देखते हैं, तो वास्तव में उस क्षमा का अनुभव हमें यह कहने के लिए प्रेरित नहीं करता है, आप जानते हैं, देखें कि हम किससे बच सकते हैं। वास्तविक क्षमा हमारे दिलों को इस हद तक बदल देती है कि हम कहना चाहते हैं, मैं परमेश्वर के लिए जीना चाहता हूँ, और मैं उनके प्रति अपनी भक्ति और अपने प्रेम को व्यक्त करना चाहता हूँ, जो उन्होंने मेरे प्रति दिखाया है।

क्षमा करने से स्वतंत्रता नहीं मिलती। क्षमा करने से प्रेम और प्रतिबद्धता मिलती है। पौलुस कहता है, क्या हमें कहना चाहिए, आओ हम पाप करें, और अधिक पाप करें ताकि अनुग्रह बढ़े।

भगवान न करे। हम अपने पापों से मुक्त हो गए हैं और जिस तरह से भगवान हमें उस पाप से बचाते हैं उसका एक हिस्सा क्षमा के प्रेम की शक्ति है। और इज़राइल ने अपने पिछले इतिहास में हर तरह से इसका अनुभव किया है।

जब उन्होंने गोलियाँ पूरी तरह से तैयार होने से पहले ही सुनहरे बछड़े की पूजा करके हनीमून पर भगवान के खिलाफ धोखा किया, तो भगवान ने उन पर दया और अनुग्रह बढ़ाया। परन्तु जो वाचा मैं भविष्य में उनके साथ बान्धता हूँ वह उस वाचा के समान नहीं होगी जो मैं ने उन्हें मिस्र से निकालते समय बान्धती थी। यह उससे भी बेहतर होने वाला है।

और मुझे लगता है कि क्षमा का एक गहरा स्तर और ईश्वर की क्षमा का एक गहरा अनुभव इसका हिस्सा होने जा रहा है। ठीक है, तो नई वाचा को पुरानी वाचा के तहत विफलताओं द्वारा उठाए गए मुद्दों को हल करने में, ठीक है, अतीत के संबंध में, यह उन सभी पापों और विफलताओं के लिए क्षमा प्रदान करता है जो इस बिंदु तक सैकड़ों वर्षों में हुए हैं। लेकिन कुछ और भी होना चाहिए, अगर यह नई वाचा काम करने जा रही है, तो भविष्य के बारे में क्या? हम कैसे गारंटी देंगे कि पाप का यह पैटर्न जारी नहीं रहेगा? खैर, क्षमा, आंशिक रूप से, इसे प्रेरित करने जा रही है।

लेकिन इस नए उद्धार का दूसरा घटक जिसका वादा परमेश्वर इस्राएल से कर रहा है, जो इस नई वाचा के केंद्र में होगा वह यह है कि प्रभु अपने लोगों को प्रभु का पालन करने के लिए एक नई सक्षमता और एक नई क्षमता देने जा रहा है। और जिस तरह से यिर्मयाह की किताब में यह समझाया गया है कि यिर्मयाह कहता है, प्रभु उनके दिलों पर अपना कानून लिखने जा रहा है। इसलिए, पुरानी वाचा में, कानून पथरों पर लिखा गया था।

और यह वह आज्ञा थी, जिसकी यह श्रृंखला थी, जो लोगों के सामने बाह्य रूप से खड़ी थी और उन्हें कुछ चीजें करने का आदेश देती थी। उसी तरह जैसे जब हम देखते हैं कि घास या गीले पेंट पर नहीं चलना चाहिए, तो हमारे पास बस यह आंतरिक है, उस बाहरी आदेश को रखने की आंतरिक इच्छा के बिना, हम उसका पालन नहीं करेंगे। और इसलिए, भगवान जो वादा कर रहा है वह यह है कि मैं तुम्हें घास पर न चलने की इच्छा देने जा रहा हूँ।

जब आप उस गीले पेंट को देखेंगे, तो मैं उस व्यक्ति की इच्छा को सबसे पहले रखने जा रहा हूँ जिसने वहां वह चिन्ह लगाया है, और मैं आपको मेरी बात मानने और इन कानूनों का पालन करने

की क्षमता और क्षमता देने जा रहा हूँ और ये आज़ाएँ ठीक हैं। यह फिर से, उस समस्या का समाधान है जो विशेष रूप से यिर्मयाह के दिनों के लोगों के लिए सच था।

पापों की क्षमा, यिर्मयाह, यहोवा ने यिर्मयाह से कहा था, मैं उनके पापों को स्मरण करूँगा और उन्हें दण्ड दूँगा। तो, समाधान यह है कि भगवान कहते हैं, मैं उनके पाप को भूल जाऊँगा और इसे याद नहीं रखूँगा। लेकिन जब प्रभु कहते हैं, मैं उन्हें एक नया दिल देने जा रहा हूँ, और मैं उनके दिल पर कानून लिखने जा रहा हूँ, तो यह विशेष रूप से उस चीज़ को उलट देता है जिसके बारे में हमने यिर्मयाह अध्याय 17, श्लोक एक में पढ़ा है।

यहां उन लोगों की स्थिति है जिनकी यिर्मयाह सेवा कर रहा है। वह कहता है कि यहूदा का पाप लोहे की पिन और हीरे की नोक से लिखा है, और यह उनके हृदय की पटिया पर खुदा हुआ है। तो, इन लौह उपकरणों के बारे में सोचें जिनका उपयोग संदेशों, अक्षरों और शब्दों को गोलियों पर अंकित करने के लिए किया जाता था।

उसी प्रकार, इस्राएल का पाप उनके हृदय और उनके चरित्र में गहराई से अंकित हो गया है। यह उनका स्वभाव है। और उनमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा नहीं है।

और इसलिए, परमेश्वर जो करने जा रहा है वह उन दिलों को ले लेगा जिनमें पाप भरा हुआ है। और वह उसे मिटा देगा और उसके स्थान पर एक हृदय स्थापित करेगा जिसमें उसके शब्द अंकित हैं। और तब उनमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की आंतरिक इच्छा होगी।

17:9 कहता है कि हृदय सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला और अत्यन्त रोगी है। इसे कौन समझ सकता है? खैर, प्रभु अपने लोगों के लिए हृदय की शल्य चिकित्सा करने जा रहा है, और वह उनके हृदय की समस्या को ठीक करने जा रहा है। अध्याय 32, पद 39 से 40, स्पष्ट करते हैं कि जब परमेश्वर अपने लोगों के हृदय पर व्यवस्था लिखता है, तो उनमें उसकी आज्ञा मानने की इच्छा होगी।

वे हमेशा वफादार रहेंगे। प्रभु उनके अंदर अपना भय डालेंगे। वे कानून का पालन करेंगे और निर्वासन की इस विपत्ति का सामना करेंगे जो लोगों ने यिर्मयाह के दिनों में अनुभव की थी।

उन्हें फिर कभी ऐसा नहीं करना पड़ेगा क्योंकि नई वाचा उन्हें आज्ञा मानने की क्षमता और योग्यता देगी। इसलिए, जब हम नई वाचा और नए हृदय के इस विचार के बारे में सोचना शुरू करते हैं, तो पुराने नियम के सभी प्रकार के अंश और चीजें मेरे दिमाग में घूमने लगती हैं। यह विचार कि परमेश्वर अपने लोगों को एक नया हृदय देने जा रहा है, कुछ ऐसा है जिसके बारे में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पहले ही बात की जा चुकी है।

और मैं चाहता हूँ कि हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में होने वाली एक हलचल पर ध्यान दें जो मुझे लगता है कि यिर्मयाह में भी हो रही घटनाओं को दर्शाती है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 10, श्लोक 16 में, प्रभु लोगों से कहते हैं, इसलिए अपने हृदय की चमड़ी का खतना करो और अब और हठी मत बनो। अपने हृदय के बाहरी हिस्से के उस कठोर हिस्से को काट दो जो तुम्हें परमेश्वर की आज्ञा मानने से रोक रहा है।

अपने हृदय का खतना करें और हृदय परिवर्तन का अनुभव करें। अपना हृदय परमेश्वर को सौंप दें ताकि आपमें उसकी आज्ञा मानने की इच्छा पैदा हो। और यहाँ ध्यान दें, परमेश्वर इस्राएल को ऐसा करने की आज्ञा दे रहा है।

खैर, हम जानते हैं कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक और पुराने नियम के बाकी हिस्सों में इस्राएली लोग कठोर हृदय वाले लोग हैं। और अंततः, उन्हें निर्वासन में भेज दिया जाएगा। तो, व्यवस्थाविवरण 30 में, जब वे निर्वासन में होंगे तो परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या करने जा रहा है? वह यह कहता है: जब वे उसके पास वापस आएंगे और जब वे पश्चाताप करेंगे और जब वे इन देशों में रहते हुए प्रभु की ओर मुड़ेंगे, तो प्रभु आपके हृदय और आपकी संतान के हृदय का खतना करेंगे ताकि आप अपने पूरे दिल से प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम करें।

इसलिए, व्यवस्थाविवरण इस विचार से शुरू होता है, अपने हृदय को प्रभु के लिए खतना करो। यह तुम्हारी जिम्मेदारी है। लोग ऐसा नहीं कर सकते।

अंततः, परमेश्वर उन्हें एक नया हृदय देगा और परमेश्वर उन्हें आज्ञा मानने की क्षमता देगा। अब, उनमें आज्ञापालन करने की क्षमता थी, और हम उसके बारे में बात करेंगे, लेकिन उन्होंने प्रभु का अनुसरण न करने का निर्णय लिया। प्रभु अंततः हस्तक्षेप करने जा रहे हैं और हृदय शल्य चिकित्सा करेंगे जो उन्हें बदल देगा।

यही आंदोलन हम ईजेकील की पुस्तक में देखते हैं। यहजेकेल अध्याय 11 जा रहा है, मुझे क्षमा करें, यहजेकेल अध्याय 18। मुझे वह अंश पढ़ने दीजिए।

यहजेकेल अध्याय 18, श्लोक 31 यह कहता है: जितने अपराध तू ने किए हैं उन सब को दूर कर दे, और अपने आप को नया हृदय और नई आत्मा बना ले। हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरोगे? तो, परमेश्वर इस्राएल को क्या करने के लिए कहता है? एक नया दिल पाओ. भगवान के साथ सही हो जाओ.

अपने पाप से मुंह मोड़ो. एक नया दिल पाओ. तुम्हें अपने पाप के लिए क्यों मरना चाहिए? और यदि आप इस हृदय परिवर्तन का अनुभव नहीं करते हैं, तो आप वहीं जा रहे हैं।

ठीक है। तो, यह कुछ ऐसा है जो परमेश्वर इस्राएल के लोगों को करने के लिए कहता है। उन्हें अपने हृदय का खतना करना है।

खैर, प्रभु यहजेकेल अध्याय 11, श्लोक 18 और 19 में लोगों से कहते हैं, प्रभु कहते हैं कि मैं उन्हें एक दिल दूंगा और उनके भीतर एक नई आत्मा डालूंगा। मैं उनके शरीर से पत्थर का दिल निकाल दूंगा और उन्हें मांस का दिल दूंगा। इसलिए, व्यवस्थाविवरण कहता है, प्रभु के लिए अपना खतना करो।

अपने हृदय का खतना करो। लोग विद्रोही और हठीले हैं। जब उन्हें निर्वासन में भेजा जाएगा, तो परमेश्वर उनके हृदय का खतना करेगा।

यहेजकेल की पुस्तक, अपने लिए एक नया हृदय प्राप्त करें। आपको क्यों मरना चाहिए? अंततः, उन्हें निर्वासन के न्याय का अनुभव हुआ क्योंकि वे परमेश्वर की ओर वापस नहीं लौटे। परमेश्वर उनसे क्या वादा करता है? मैं उन्हें एक नया हृदय दूंगा।

वही आंदोलन यिर्मयाह की पुस्तक में मौजूद है। किताब की शुरुआत में ही वापस लौटने के आह्वान में जो रूपक इस्तेमाल किया गया है, उसे याद रखें। यिर्मयाह अध्याय चार, श्लोक दो, अपने हृदय का खतना करो।

जो मिट्टी प्रतिरोधी है, उसे जोतें और भगवान के पास लौट आएं। अपने हृदय का खतना करो। अंततः लोग ऐसा नहीं करते।

क्यों? क्योंकि जो पाप उन्हें प्रिय है वह उनके हृदयों पर अंकित है। यही उनकी इच्छा है। वह उनका दिल है।

तो, परमेश्वर यिर्मयाह में क्या करने का वादा करता है? वह उन्हें एक नया दिल देने का वादा करता है। तो, अपने लिए एक नया दिल पाने की वही गति। लोग ऐसा नहीं करते।

भगवान अंततः उन्हें एक नया हृदय देते हैं। वह सिर्फ यिर्मयाह नहीं है। यह व्यवस्थाविवरण है और यहेजकेल भी है।

एक पैटर्न है। भगवान हृदय की सर्जरी करने जा रहे हैं जो उनके लोगों में परिवर्तन लाएगा। ठीक है।

हम अपने आप से सवाल पूछते हैं, ठीक है, और भगवान उनके दिल पर कानून लिखने जा रहे हैं, उन्हें पालन करने की इच्छा देंगे। भगवान उनकी हृदय शल्य चिकित्सा करने जा रहे हैं। कैसे? ऐसा कैसे होता है? आखिरकार परमेश्वर उसके हृदय पर कानून कैसे लिखता है? खैर, हम भविष्यवक्ताओं के लिए कुछ अन्य अंश और कुछ अन्य वादे लाना शुरू करते हैं।

आप देखिए, नई वाचा की शब्दावली में यिर्मयाह कुछ हद तक अद्वितीय है, लेकिन ऐसे कई अन्य भविष्यवक्ता हैं जो मूल रूप से उसी चीज़ और इस वाचा के बारे में बात कर रहे हैं जिसे भगवान भविष्य में इज़राइल के साथ बनाने जा रहे हैं। नई वाचा का समय राज्य और पुनर्स्थापना का समय होने जा रहा है। इसलिए, नई वाचा कुछ ऐसी चीज़ नहीं है जो यिर्मयाह के लिए विशिष्ट है।

यह वास्तव में पुनर्स्थापना के वादों के साथ-साथ चलता है जो हम भविष्यवक्ताओं में पढ़ते हैं। और विशिष्ट तरीका, जैसा कि हम यिर्मयाह को लेते हैं और जैसा कि हमने इन अन्य वादों के अलावा उस मार्ग को रखा है कि इस बहाली को लाने के लिए भगवान इस्राएल के लोगों के जीवन में क्या करने जा रहे हैं, यहां वह तरीका है जिससे वह कानून लिखने जा रहे हैं उनके दिलों पर। वह एक नए तरीके से, एक नए तरीके से, अपनी आत्मा को सामने लाकर ऐसा करने जा रहा है।

और इसलिए, यिर्मयाह के हृदय पर कानून का लेखन कई अन्य भविष्यसूचक अंशों से जुड़ा हुआ है जो विशेष रूप से पवित्र आत्मा के उंडेले जाने और परमेश्वर की आत्मा के उंडेले जाने के बारे में बात करने वाले हैं। मैं इनमें से कुछ का ही उल्लेख करना चाहूँगा। यशायाह अध्याय 32 श्लोक 14 और 18।

यरूशलेम नष्ट होने वाला है। यहूदा और इस्राएल न्याय के अधीन होनेवाले हैं। श्लोक 14 कहता है कि महल त्याग दिया गया है।

यह कब तक चलेगा? श्लोक 15, जब तक कि आत्मा हम से ऊपर से नहीं डाली जाती और जंगल एक उपजाऊ खेत नहीं बन जाता और उपजाऊ खेत जंगल नहीं बन जाता। परिवर्तन किससे होगा? प्रभु अपनी आत्मा को एक नए तरीके से उंडेलने जा रहे हैं। प्रभु अपने दिल पर, अपने लोगों के दिलों पर कानून कैसे लिखेंगे? वह उनके भीतर अपनी आत्मा डालने जा रहे हैं।

यशायाह के अध्याय 59 में 20 और 21 आयतें हैं। प्रभु वहाँ कहते हैं, “याकूब में जो लोग अपने अपराध से फिर जाते हैं, उनके लिए एक छुड़ानेवाला सिय्योन में आएगा, प्रभु की यही वाणी है।” और मेरे लिए, यह मेरी वाचा है जो मैं उनके साथ बाँधता हूँ।

यह नई वाचा के बारे में बात नहीं करता है, बल्कि यह भविष्य की वाचा है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ बनाने जा रहा है। यहोवा कहता है, मेरा आत्मा जो तुझ पर है, और अपने वचन जो मैं ने तेरे मुँह में डाले हैं, वे तेरे मुँह से, और तेरे वंश के मुँह से कभी भी छूटेंगे नहीं। प्रभु कहते हैं कि मैं अपनी आत्मा उण्डेलूँगा, और आत्मा परमेश्वर के वचनों को उसके लोगों के मुँह में भी डालेगा।

अब मैं चाहता हूँ कि आप यिर्मयाह अध्याय एक को याद रखें, यह वही है जो भगवान ने एक भविष्यवक्ता के रूप में यिर्मयाह के लिए किया था। और यिर्मयाह ने उन शब्दों को निगल लिया और वे उसे स्वाद में मीठे लगे। और उसके परिणामस्वरूप, यिर्मयाह परमेश्वर के वचन का एक मूर्त प्रतिनिधित्व बन गया।

उसने परमेश्वर के वचन को जीया। अंततः इस्राएल के सभी लोगों के साथ यही होने वाला है। वे परमेश्वर के वचन का जीवंत प्रतिनिधित्व बनने जा रहे हैं।

क्यों? पवित्र आत्मा की सक्षमता और शक्ति के कारण। योएल अध्याय दो कहता है कि अंतिम दिन वह समय होगा जब परमेश्वर सभी मनुष्यों और सभी इस्राएल, युवा पुरुषों, युवा महिलाओं, वृद्ध पुरुषों, वृद्ध महिलाओं, सभी इस्राएल, महान लोगों, नेताओं, भविष्यद्वक्ताओं, बल्कि लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलेगा। लोगों की आत्मा, परमेश्वर के लोगों पर उंडेलने जा रहा है, जो पहले कभी अनुभव नहीं किया गया है।

और यही वह बात है जो उनके दिलों पर कानून को लिखना संभव बनाएगी ताकि उनमें आज्ञा मानने की इच्छा पैदा हो। अब, मुझे लगता है कि यिर्मयाह अध्याय 31, आयत 31 से 34 को लेना और इसे उस मार्ग के साथ रखना विशेष रूप से सहायक है जो मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं में सबसे अधिक समान है, यहजकेल अध्याय 36, आयत 26 से 28। तो, आइए इस मार्ग को देखें।

हमारी कक्षा में, जब हम इस अंश का अध्ययन कर रहे होते हैं, तो मैं अक्सर अपने छात्रों से कहता हूँ कि वे इन दो पाठों को एक साथ रखें और तुलना करें कि इस अंश में कौन सी चीजें समान हैं और कौन सी चीजें अलग हो सकती हैं। और मुझे लगता है कि वे प्रत्येक के बारे में हमारी समझ को सूचित करते हैं। लेकिन यहाँ यह जकेल क्या कहता है।

पद 26, मैं तुम्हें नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा डालूंगा। यिर्मयाह कहता है, मैं व्यवस्था लिखने जा रहा हूँ, प्रभु हमारे हृदयों पर व्यवस्था लिखने जा रहा है। यह जकेल में संदेश और भी अधिक अनुवादित है, प्रभु तुम्हें बिल्कुल नया हृदय देने जा रहा है।

और वह कहता है, मैं तुम्हारे शरीर से पत्थर का हृदय निकाल दूंगा, और तुम्हें मांस का हृदय दूंगा। और मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा और तुमको मेरी विधियों पर चलने और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहने के लिए प्रेरित करूँगा। तो, यिर्मयाह में ऐसा क्या था जिसने उन्हें आज्ञा मानने में सक्षम बनाया? प्रभु उनके हृदय पर व्यवस्था लिखने जा रहा है।

यह जकेल में ऐसा क्या है जो लोगों को आज्ञा मानने की क्षमता देगा? प्रभु उनके भीतर अपनी आत्मा डालने जा रहा है। इसलिए, यिर्मयाह का क्या मतलब है जब वह कहता है कि परमेश्वर लोगों के दिलों पर कानून लिखने जा रहा है? इसका मतलब है कि प्रभु अपनी आत्मा देकर उनकी आज्ञाकारिता को सक्षम करने जा रहा है। यह ऐसा है मानो इस्राएल एक विश्वासघाती वाचा भागीदार रहा है।

इसलिए, प्रभु उनके भीतर एक तरह से और एक ऐसी क्षमता में आने जा रहे हैं जो उन्हें अंततः एक वफादार वाचा भागीदार बनने में सक्षम बनाएगा। अब इन सब के प्रकाश में और भविष्य के लिए जो वादा किया जा रहा है उसके प्रकाश में, मुझे लगता है कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि यिर्मयाह क्या कह रहा है और यिर्मयाह पुरानी वाचा के बारे में क्या नहीं कह रहा है। वह वादा कर रहा है कि भविष्य में और अधिक सक्षमता और अधिक सशक्तीकरण होने जा रहा है।

आत्मा का उंडेला जाना तय है, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ जैसा कि इस्राएल ने पहले कभी अनुभव किया हो। अधिक कट्टरपंथी क्षमा होने जा रही है और यह सब सक्षमता का हिस्सा है। लेकिन यिर्मयाह यह नहीं कह रहा है कि वह यह दावा नहीं कर रहा है कि परमेश्वर ने पुरानी वाचा के तहत सक्षमता और सशक्तीकरण प्रदान नहीं किया था।

मुझे लगता है कि बहुत से लोगों को यह समझ है। खैर, अगर इस्राएल कभी भी पुराने नियम में परमेश्वर की आज्ञा मानने वाला था, तो उन्हें मूल रूप से अपनी ताकत से ऐसा करना होगा। अपने दिल का खतना करो।

अपने लिए एक नया दिल बनाओ। या अगर वे कानून का पालन करने जा रहे थे, तो यह मूल रूप से एक बाहरी चीज थी जहाँ वे नियमों के अनुसार रहते थे। यह एक कानूनी व्यवस्था थी।

उन्हें ऐसा करने में मदद करने की कृपा नहीं थी। यिर्मयाह पुरानी वाचा के बारे में ऐसा नहीं कह रहा है। वह यह भी नहीं कह रहा है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को असफलता के लिए तैयार किया और पुरानी वाचा के तहत उनके लिए उसकी आज्ञा का पालन करना असंभव बना दिया।

यह सच नहीं है। परमेश्वर ने, उस मुक्ति के माध्यम से जो उसने निर्गमन के समय प्रदान की थी, परमेश्वर ने एक मुक्ति प्रदान की थी जिसने इस्राएल के लोगों को आध्यात्मिक परिवर्तन प्रदान किया। समस्या यह थी कि उस समय इज़राइल राष्ट्र में रहने वाले बहुत से लोगों को उस अनुग्रह का लाभ नहीं मिला जो वहां था।

इसका मतलब यह नहीं है कि पुरानी वाचा में कोई अनुग्रह नहीं था और अंतर यह है कि नई वाचा अनुग्रह प्रदान करने वाली है। यह कह रहा है कि पुरानी वाचा और नई वाचा के बीच जो अंतर होगा वह यह है कि लोग इस जबरदस्त अनुग्रह का पूरी तरह से लाभ उठाएं जो भगवान उन पर बरसाने जा रहा है। इस बात सुनो।

जब प्रभु व्यवस्थाविवरण अध्याय 10 में कहते हैं, अपने दिलों का खतना करो, या जब भविष्यवक्ता यिर्मयाह कहते हैं कि अपने दिलों का खतना करो, अगर प्रभु ने उन्हें अपने दिल में यह तय करने की क्षमता नहीं दी कि वे प्रभु का अनुसरण करने जा रहे हैं, तो यह मूल रूप से एक खाली आदेश है। यह तथ्य कि प्रभु उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दे रहे हैं, यह दर्शाता है कि उनके पास क्षमता थी, अगर उन्होंने सही तरीके से परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया, तो उनकी आज्ञा का पालन करने और उनकी आज्ञाओं का पालन करने की। जब मूसा उन्हें मूसा का कानून देता है और फिर जब वह उन्हें व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 में उनकी वाचा की ज़िम्मेदारियों की याद दिलाता है, तो वह इस्राएल के लोगों से यह नहीं कहता है कि आप जानते हैं कि आप मूसा के कानून का पालन नहीं कर सकते क्योंकि यह असंभव है।

वह उनसे कहता है कि परमेश्वर ने उन्हें अपने नियम का पालन करने की क्षमता दी है। व्यवस्थाविवरण 30 में, श्लोक 11 में यह कहा गया है: जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूँ, वह तुम्हारे लिए बहुत कठिन नहीं है। यह स्वर्ग में दूर नहीं है कि तुम्हें इसे प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में चढ़ना पड़े।

यह धरती की गहराई में नहीं है जहाँ आपको गहरी खुदाई करनी पड़े। यह आपके सामने ही है। प्रभु ने, पलायन के समय लोगों के लिए जो किया, उद्धार के चमत्कार के माध्यम से, प्रभु ने आध्यात्मिक व्यक्तिगत परिवर्तन उपलब्ध कराया था।

समस्या यह थी कि पुरानी संधि के तहत बहुत से लोगों ने कभी भी इसका लाभ नहीं उठाया। लेकिन पुरानी वाचा के तहत, जैसे-जैसे व्यक्तियों ने भगवान की कृपा का जवाब दिया और जैसे-जैसे उन्होंने भगवान में विश्वास किया, मेरा मानना है कि उन्होंने आध्यात्मिक उत्थान और परिवर्तन का अनुभव किया जो आज हम विश्वासियों के रूप में अनुभव के समान है। जैसे ही उन्होंने प्रभु को व्यक्तिगत रूप से जाना, ईश्वर ने उनके जीवन में परिवर्तन का कार्य किया, जहाँ उनमें उनसे प्रेम करने, उनकी आज्ञा मानने और कानून को अपने हृदयों पर लिखने की क्षमता आई।

भजनकार भजन 37, श्लोक 30 और 31 में कहता है, धर्मी के मुख से ज्ञान की बातें निकलती हैं, और उसकी जीभ से न्याय की बातें निकलती हैं। परमेश्वर का नियम उसके हृदय में है। उसके कदम नहीं फिसलते।

तो, पुरानी वाचा के तहत ऐसे लोग थे जिन्होंने ठीक वही अनुभव किया जो यिर्मयाह वादा कर रहा है। मैं उनके हृदयों पर कानून लिखूंगा। भजनकार कहता है कि मुझे वह मिल गया है।

अध्याय 40, श्लोक 7 और 8 में, राजा के रूप में दाऊद कहता है, देखो मैं पुस्तक की पुस्तक में आया हूँ, मेरे बारे में लिखा है। राजा के रूप में दाऊद कहता है, मैं समझता हूँ कि व्यवस्था की पुस्तक में मेरे लिए कुछ बातें हैं। यह मेरे बारे में लिखा है।

मैंने सिंहासन पर बैठते ही इसकी एक प्रति लिख ली। लेकिन फिर वह पद 8 में यह भी कहता है, हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ। तेरा नियम मेरे हृदय में है।

इसलिए, पुराने नियम में लोगों को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए किसी मानवीय बाहरी तरीके से अपने स्वयं के प्रयास में जितना संभव हो सके उतना प्रयास करने की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने आध्यात्मिक परिवर्तन का अनुभव किया। मेरा मानना है कि उन्होंने आत्मा के पुनर्योजी कार्य का अनुभव किया।

पुराने नियम में आत्मा का मंत्रालय और आत्मा का कार्य हमारे लिए स्पष्ट रूप से निर्धारित और विस्तारित नहीं किया गया है, लेकिन मेरा मानना है कि यह कुछ वास्तविक तरीके से वहां था। एक परिवर्तन यह हुआ कि डेविड जैसे लोग जो वास्तव में प्रभु को जानते थे, उन्होंने इसका अनुभव किया। भजन 119 में, डेविड इन भव्य तरीकों से व्यक्त करता है कि वह ईश्वर के कानून से कितना प्यार करता है।

यह उसके लिए शहद से अधिक कीमती है, उसके लिए शहद से अधिक मीठा है, सोने से अधिक कीमती है। और आप कहते हैं, यदि डेविड लेविटिकस के बारे में इतना उत्साहित है, तो कल्पना करें कि अगर वह रोमन और 1 जॉन पढ़ सके तो उसे कैसा महसूस होगा। लेकिन एक पुरानी वाचा के विश्वासी के रूप में भी, वह परमेश्वर के कानून से प्यार करता था।

और उस भजन में, वह केवल परमेश्वर के वचन के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त नहीं करता है। वह यह भी कहता है, हे भगवान, मेरे जीवन में अपना काम करो जो मुझे इसका पालन करने का स्वभाव और इच्छा देगा। मुझे एहसास है कि मैं इसे अपने आप नहीं कर सकता। मुझे वह अनुग्रह दीजिए जिसकी मुझे आवश्यकता है।

और परमेश्वर ने स्वेच्छा से उन लोगों को यह सुविधा दी जो उसे व्यक्तिगत रूप से जानते थे। जब दाऊद ने पाप किया, बतशेबा के साथ पाप करने के बाद, और इस पाप को छिपाने के बाद, आखिरकार, परमेश्वर से दूर जाने की लंबी अवधि के बाद, वह भजन 51 में परमेश्वर के पास आता है, और कहता है, मेरे लिए एक नया हृदय बनाया और मेरे भीतर एक सही आत्मा को नवीनीकृत किया। मुझे लगता है कि दाऊद जो कल्पना कर रहा है वह आध्यात्मिक परिवर्तन का कार्य है जो

इसे संभव बनाता है, चाहे पुरानी वाचा के तहत या नई वाचा के तहत, एक व्यक्ति के लिए प्रभु की आज्ञा मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना।

यह पुरानी वाचा के तहत लोगों के लिए प्रदान किया गया था। आप कहते हैं, ठीक है, अगर यह सच है और यह समझ में आता है, तो हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 29, श्लोक दो से चार जैसे अंशों के साथ क्या करते हैं? मूसा यहाँ लोगों से कहता है, मूसा ने सभी इस्राएलियों को बुलाया और उनसे कहा, तुमने वह सब देखा है जो यहोवा ने मिस्र की भूमि में फिरौन और उसके सभी सेवकों के साथ तुम्हारी आँखों के सामने किया था। तुम्हारी आँखों ने यह देखा है।

लेकिन फिर वह कहता है, लेकिन आज तक, प्रभु ने तुम्हें समझने के लिए दिल या देखने के लिए आँखें या सुनने के लिए कान नहीं दिए हैं। वहाँ क्या हो रहा है? मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि लोगों ने खुद को उस अनुग्रह का लाभ नहीं उठाया है जो परमेश्वर ने उपलब्ध कराया है। और इसके परिणामस्वरूप, उनकी सज़ा यह रही है कि उन्होंने हृदय के उस परिवर्तन का अनुभव नहीं किया है जो प्रभु ने उन लोगों के लिए किया था जो वास्तव में प्रभु को जानते थे।

और मिस्र से बाहर आने वाली पीढ़ी के सभी लोग जंगल में मर गए क्योंकि उनके पास विद्रोही हृदय था। और यहाँ तक कि उस पीढ़ी में भी जो देश में जाने की तैयारी कर रही है, ऐसे लोगों की एक बड़ी संख्या है जो व्यक्तिगत रूप से प्रभु को नहीं जानते हैं। इसलिए, इस्राएल के बारे में यह वर्णन कि वे हठी, विद्रोही और कठोर हृदय वाले हैं, हम इसे देख सकते हैं और कह सकते हैं, अच्छा, आप जानते हैं क्या? परमेश्वर ने अपने लोगों को असफलता के लिए तैयार किया है।

और एक अंतिम अर्थ में, यह सच है। अंततः, एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी। लेकिन उस पुरानी वाचा के भीतर, जब व्यक्तियों को प्रभु का पता चला, तो परमेश्वर ने उन्हें आज्ञापालन करने की क्षमता प्रदान की।

तो, यहाँ पुरानी वाचा और नई वाचा के बीच अंतर है। पुरानी वाचा एक राष्ट्रीय वाचा थी जो संपूर्ण इस्राएल राष्ट्र के साथ बनाई गई थी। एक राष्ट्रीय वाचा के रूप में, उस वाचा में विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों शामिल थे।

इसमें वे लोग शामिल थे, जिन्होंने जातीय यहूदी के रूप में पलायन से मुक्ति का अनुभव किया था। लेकिन उस समूह के भीतर ऐसे लोग भी थे जिन्होंने कभी भी व्यक्तिगत रूप से अपना विश्वास और विश्वास नहीं रखा था। उन्होंने उस व्यक्तिगत परिवर्तन का कभी अनुभव नहीं किया था।

इस्राएल के इतिहास में आगे बढ़ते हुए, ऐसा प्रतीत होता है कि जो लोग वास्तव में प्रभु को जानते थे और जिन्होंने व्यक्तिगत उद्धार का अनुभव किया था, उनमें से शेष लोग अक्सर बहुत ही छोटे अल्पसंख्यक थे। जो राष्ट्र प्रभु को नहीं जानता था, वह हठी और विद्रोही था।

वे कठोर हृदय वाले थे। वे वे लोग थे जिन्हें प्रभु ने आज तक समझने और आज्ञा मानने के लिए हृदय नहीं दिया। लेकिन यह उनका अपना चुनाव था।

यह वाचा की विफलता नहीं थी। जो लोग वास्तव में प्रभु को जानते थे, जो व्यक्तिगत पश्चात्ताप और विश्वास में उसे जानते थे, उन्होंने हृदय परिवर्तन का अनुभव किया। पुरानी वाचा और नई वाचा के बीच अंतर यह है कि नई वाचा में, प्रत्येक व्यक्ति जो उस वाचा का हिस्सा है, वह व्यक्तिगत रूप से प्रभु को जानेगा।

प्रत्येक व्यक्ति जो उस वाचा से जुड़ा है, उसका परमेश्वर के साथ वास्तव में एक बचाने वाला रिश्ता होगा। और जब लोग विश्वास और पश्चात्ताप के माध्यम से भगवान के साथ उस बचाने वाले रिश्ते में आते हैं, तो भगवान परिवर्तन का यह कार्य करते हैं। आप देखिए, पुरानी वाचा कई मायनों में हमारी चर्च भूमिकाओं के समान थी।

हमारी चर्च भूमिकाएँ हमारे चर्च के सदस्यों और उन लोगों से बनती हैं जो प्रभु को व्यक्तिगत रूप से गहराई से जानते हैं। लेकिन हमारी चर्च भूमिकाएँ ऐसे लोगों से भी बनी हैं जिनका ईश्वर से कोई संबंध नहीं है। वे चर्च के सदस्य हो सकते हैं, लेकिन वे प्रभु को नहीं जानते।

वह पुरानी वाचा के तहत इज़राइल है। और ज्यादातर मामलों में, ऐसा लगता है कि अधिकांश लोग ऐसे थे जिन्होंने कभी भी व्यक्तिगत मुक्ति का अनुभव नहीं किया था। नई वाचा का सशक्तिकरण यह है कि ईश्वर पूरे राष्ट्र को अपना अनुसरण करने में सक्षम बनाएगा।

यही कारण है कि पाप का पैटर्न टूट जाएगा। यही कारण है कि निर्वासन फिर कभी नहीं होगा: हर कोई जो इस वाचा का हिस्सा है, वह प्रभु को जानेगा और परमेश्वर के लोगों का हिस्सा बनेगा। लेकिन पुराने नियम में यिर्मयाह यह नहीं कह रहा है कि पुराने नियम में लोगों को इस तरह के परिवर्तन के बारे में पता नहीं था या उन्होंने इसका अनुभव नहीं किया था।

याद रखें कि यूहन्ना अध्याय 3 में यीशु ने नीकुदेमुस से क्या कहा था। वह कहता है कि तुम्हें फिर से जन्म लेना होगा। स्वर्ग के राज्य में आने के लिए तुम्हें आध्यात्मिक परिवर्तन का अनुभव करना होगा। और नीकुदेमुस कहता है, नए जन्म से तुम्हारा क्या मतलब है? तुम किस बारे में बात कर रहे हो? क्या मैं फिर से अपनी माँ के गर्भ में प्रवेश कर सकता हूँ? क्या मैं फिर से अपनी माँ के गर्भ में प्रवेश कर सकता हूँ और पुनर्जन्म ले सकता हूँ? यीशु, तुम किस बारे में बात कर रहे हो? और यीशु उससे कहते हैं, क्या तुम मुझे यह बता रहे हो कि इस्राएल के शिक्षक के रूप में, तुम इन चीजों के बारे में नहीं जानते हो? तुम यहजेकेल 36 के बारे में नहीं जानते हो? तुम नहीं जानते हो... यह एक हृदय परिवर्तन है जो परमेश्वर ने हमेशा उन लोगों के लिए किया है जो वास्तव में उसे जानते थे।

लेकिन नई वाचा का सशक्तिकरण और सक्षमता यह है कि जो कोई भी वाचा का हिस्सा है, वह प्रभु को जानेगा। और इसलिए, अतीत के लिए क्षमा है, और फिर भविष्य के लिए सक्षमता है। अब, जल्दी ही, हम यहाँ अपने समय के अंत के करीब आ रहे हैं।

मैं यह जानना चाहता हूँ कि 31 से 34 में नई वाचा के बारे में क्या अन्य विशिष्ट वादे दिए गए हैं। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के दिलों में व्यवस्था डालने के बाद, पद 33 में कहा गया है, मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे। इसलिए, वाचा संबंध की बहाली, उस अभिव्यक्ति को वाचा सूत्र के रूप में जाना जाता है।

यहोवा उनके लोग हैं, यहोवा उनका परमेश्वर है, इस्राएल परमेश्वर के लोग हैं, यह सब पुनः स्थापित होने जा रहा है। अब कोई भी अपने पड़ोसी और अपने भाई को यह नहीं सिखाएगा कि, यहोवा को जानो, क्योंकि वे सब मुझे जानेंगे, छोटे से लेकर बड़े तक। ठीक है।

इस वाचा का हिस्सा बनने वाले हर व्यक्ति का परमेश्वर के साथ सीधा व्यक्तिगत संबंध होगा। और कई मायनों में पुरानी वाचा में, राष्ट्रीय वाचा के कारण और जिस तरह से इसे लोगों के बीच स्थापित किया गया था, जो विश्वासी और अविश्वासी दोनों थे, परमेश्वर की उपस्थिति मुख्य रूप से इस्राएल के लोगों के लिए उनके पुजारियों, उनके भविष्यवक्ताओं, उनके नेताओं के माध्यम से मध्यस्थता की गई थी। नई वाचा में, परमेश्वर के साथ और अधिक सीधा संबंध होने जा रहा है क्योंकि हर कोई जो वाचा का हिस्सा है, वह प्रभु को जानेगा।

और फिर अंत में, हम उस वादे पर वापस आते हैं जिस पर हमने पाठ में पहले ध्यान केंद्रित किया था। परमेश्वर कहता है कि मैं उनके अधर्म और पाप को क्षमा करूँगा। मैं फिर कभी याद नहीं रखूँगा।

ये सभी चीज़ें, पाप की क्षमा, हृदय पर व्यवस्था का लिखा जाना, वाचा के रिश्ते की पुनर्स्थापना, परमेश्वर का प्रत्यक्ष ज्ञान जो उसके भीतर हर कोई है, यही सक्षमता है। यही सशक्तिकरण है। यही उद्धार का महान कार्य है।

यह दूसरा निर्गमन है जो पहले से भी बड़ा होगा। और मसीह में विश्वासियों के रूप में, आप जानते हैं, हमें इसके बारे में उत्साहित होना चाहिए क्योंकि नया नियम स्पष्ट करेगा कि यह नई वाचा केवल इस्राएल के घराने के लिए नहीं है। यह केवल यहूदा के घराने के लिए नहीं है।

परमेश्वर के लोगों के रूप में, हम अब इस नई वाचा का अनुभव कर रहे हैं। यीशु कहते हैं कि जब वह क्रूस पर चढ़ते हैं और अपनी मृत्यु से पहले की रात को अपने शिष्यों को प्याला देते हैं, तो यह प्याला उस रक्त का प्रतिनिधित्व करता है जो यिर्मयाह द्वारा वादा किए गए नए वाचा को प्रभावित करने वाला है। यिर्मयाह ने नई वाचा का वादा किया था।

नई वाचा ने जो वादा किया था उसे यीशु सक्षम बनाता है और वास्तविकता में लाता है। और हम यीशु के अनुयायियों के रूप में रहते हैं, नई वाचा के आशीर्वाद का अनुभव करते हैं जहां भगवान ने अपनी आत्मा हमारे भीतर रखी है। हमें यूँ ही माफ नहीं किया गया है।

हम नए तरीके से जीने के लिए सशक्त हैं। अब, इसके आलोक में, मैं एक उद्घरण के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। जॉन गोल्डन गेट कहते हैं, हम नए नियम के विश्वासियों के रूप में, पूर्णता के समय में रहते हैं।

हम नई वाचा के समय में रहते हैं। हम ऐसे समय में रहते हैं जहां आत्मा का प्रवाह हो रहा है, और पुराने नियम में ईश्वर की आत्मा का जो भी मंत्रालय था, हम महसूस करते हैं कि मसीह की मृत्यु के माध्यम से, ईश्वर की आत्मा बहुत अधिक महान हो गई है, आत्मा का अधिक से अधिक

उडेलना। क्रूस पर यीशु ने हमारे लिए जो किया उसके कारण ईश्वर का प्रेम हमारे दिलों को पकड़ने और हमारे जीवन को बदलने की अधिक क्षमता रखता है।

लेकिन वह कहते हैं, गोल्डन गेट कहते हैं, इसके बारे में उस प्रकाश में सोचें जो हम अक्सर अपने अनुभव में और समग्र रूप से चर्चों के जीवन में देखते हैं। वह कहते हैं, व्यवहार में, ईसाई विश्वासियों की स्थिति और जीवन या ईसाई विश्वासियों का अभ्यास और जीवन पुराने नियम के विश्वासियों से बहुत अलग नहीं हैं। हम रूत और हन्ना की तरह हैं, जो आत्मा का फल पैदा करते हैं, लेकिन हम याकूब और डेविड की तरह भी हैं, जो स्पष्ट रूप से शरीर के अनुसार जीते हैं।

और फिर वह आगे बढ़ता है और कहता है, आप जानते हैं, आइए इस आत्मा के प्रवाह के बारे में सोचें। जब हम कभी-कभी अपने स्वयं के जीवन या नए नियम में विश्वासियों के जीवन को देखते हैं, उदाहरण के लिए, कोरिंथियंस की पुस्तक में, गोल्डन गेट कहते हैं, ऐसा लगता है जैसे आत्मा अभी तक नहीं दी गई है। या बल्कि, अगर हम इसे प्रथम कुरिंथियों के दृष्टिकोण से देखें, तो ऐसा नहीं है कि आत्मा अभी तक नहीं दी गई है, इससे बहुत दूर है।

वास्तव में, ऐसा लगता है मानो आत्मा देने से और अधिक समस्याएँ हल हो गई हैं। इसलिए कोरिंथियन चर्च वाचा के मुकदमे और दैवीय निष्कासन के लिए उतना ही उत्तरदायी है जितना कि पुराने नियम के इज़राइल में भगवान के लोग थे। मसीह में विश्वासियों के रूप में, हमें नई वाचा के तहत हमारे पास मौजूद सक्षमता और सशक्तीकरण को समझने की जरूरत है।

भगवान ने अपनी आत्मा हमारे अंदर डाल दी है... भगवान ने हमें उसकी आज्ञा मानने की आंतरिक इच्छा और क्षमता दी है। और हममें से जो लोग सुसमाचार के मंत्री और नई वाचा के मंत्री हैं, उन्हें उस संदेश की शक्ति का एहसास करने की आवश्यकता है जिसे हम साझा करते हैं और लोगों के जीवन को बदलने के लिए उस संदेश की शक्ति का एहसास करना होगा। हम अपने उपदेशों, अपने व्यक्तित्वों, अपने कार्यक्रमों, अपने चर्चों से लोगों के जीवन को नहीं बदलते हैं।

हम नई वाचा के जीवन बदलने वाले संदेश के साथ लोगों के जीवन को बदलते हैं कि भगवान अतीत के पापों को माफ कर देते हैं, और जब हम भविष्य की ओर देखते हैं तो भगवान हमें आज्ञापालन करने में सक्षम बनाते हैं। अपने अगले पाठ में, हम इस पर अधिक विचार करेंगे कि हम नए नियम और उसमें हमें दिए गए अतिरिक्त रहस्योद्घाटन के प्रकाश में नई वाचा को कैसे समझते हैं। लेकिन जैसे ही हम इस पाठ को समाप्त करते हैं, हम उस सशक्तीकरण और सक्षमता का जश्न मना सकते हैं जो हमारे पास है क्योंकि हमने पहले ही अनुभव करना शुरू कर दिया है कि यिर्मयाह ने इज़राइल और यहूदा के लोगों से क्या वादा किया था जो उनकी बहाली और प्रभु के पास उनकी वापसी का एक हिस्सा होगा।

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 26, यिर्मयाह 30 से 33, नई वाचा है।